विचार जन मन के, अंकन **संध्या शेवड़े** का।

राज मिस्त्री के कुछ औजार होते हैं करंडी, हथौड़ी, सूत, साह्ल और गुणिया। इनके सहारे वह महल दुमहले खड़े कर देता है। उसका गुणिया बड़े काम की चीज है। होता तो है वो दो बाहों वाला लोहे का सिर्फ एक फुट्टा, पर ऊबड़-खाबड़ पत्थर के चार कोनों को यही गुणिया सीध में लाता है। गुणिये की तरह कुछ लोग भी होते हैं जो सीधी सच्ची बात करते हैं। बड़ों बड़ों के खम निकाल देते हैं। खुशी की बात है कि यह गुणिया राम पिछले कई अंकों से हिमाचल मित्र में तशरीफ ला रहे हैं। हर बार वे कोई न कोई पते की बात कर जाते हैं। उनसे आप सलाह सूतर भी ले सकते हैं। इस बार तो बेचारे स्वाइन फ्लू का भूत इनके पीछे पड़ा है। कहते हैं दुनिया में कई तरह के फ्लू हैं। इन्हें फैलाने वाले फलते फूलते हैं। इन्हें झेलने वाले जिंदगी और मौत के बीच झूलते हैं। कहने वाला कह गया है कि कोई मरता है और कोई मरे हुए पर पैर रख के आगे बढ़ता है।